द्विष्णुः। अग्निर्मूर्द्धा भुवः। अनु नोद्यानुमतिरन्विदनुमते त्वं। हव्यवाहꣳ स्विष्टं ॥ ३ ॥

आयत्यगमत्स्विष्टं ॥ अनु० ३ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः।

अग्निर्वा अकामयत। अन्नादो देवानाꣳ स्यामिति। सएतमग्नये कृत्तिकाभ्यः पुरोडाशमष्टाकपालं निरवपत्। ततो वै सोऽन्नादो देवानामभवत्। अग्निर्वै देवानामन्नादः। यथा ह वाअग्निर्देवानामन्नादः। एवꣳ ह वाएष मनुष्याणां भवति। यएतेन हविषा यजते। यउचैनदेवं वेद। सोऽच जुहोति। अग्नये स्वाहा कृत्तिकाभ्यः स्वाहा। अम्बायै स्वाहा दुलायै स्वाहा। नितत्न्यै स्वाहा भ्रयन्त्यै स्वाहा। मेघयन्त्यै स्वाहा वर्षयन्त्यै स्वाहा। चुपुणीकायै स्वाहेति ॥ १ ॥

प्रजापतिः प्रजाअसृजत। ताअस्मात् सृष्टाः पराचीरायन्। तासाꣳ रोहिणीमभ्यध्यायत्। सोऽकामयत। उपमावर्त्तेत। समेनया गच्छेयेति। सएतं प्रजापतये रोहिण्यै चरुं निरवपत्। ततो वै सा तमुपावर्त्तत। समेनया गच्छत। उपहवाएनं प्रियमावर्त्तते।